ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 279-281

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

गांधीवादी अहिंसा की अवधारणा और इसकी प्रासंगिकता

डॉ0 सानन्द कुमार सिंह E-mail: sanandsingh@gmail.com

Received- 21.07.2021, Revised- 26.07.2021, Accepted - 01.08.2021

सारांश : *सत्य और अहिंसा गांधीवादी दर्शन के दो प्रमुख सिद्धांत हैं। गांधी जी को उद्धृत करने के लिए "सत्य अंत है और अहिंसा इसका साधन है"। वे दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और इस प्रकार, अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा को समझने के लिए, सबसे पहले "सत्य" की समझ आवश्यक है। लेख के पहले भाग में इन सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की गई है। पेपर का दूसरा भाग आज की दुनिया में अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा की प्रासंगिकता पर चर्चा करता है। पेपर का तर्क है कि हालांकि "आदर्शवादी", अहिंसा की उनकी अवधारणा भी "व्यावहारिक" है और यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की रणनीति कैसे है।*

कुंजीभूत शब्द–सत्य और अहिंसा, अवधारणा,सिद्धांतों, प्रासंगिकता ।

गांधी जी न केवल एक लोकप्रिय नेता थे, जिन्होंने अपने करिश्माई व्यक्तित्व की ओर जनता को आकर्षित किया, बल्कि एक समाज सुधारक और दूरदर्शी भी थे, जो शिक्षा और पर्यावरण से लेकर खेल और विश्व शांति तक के विषयों पर उनके आदर्शवादी लेकिन व्यावहारिक विचारों से स्पष्ट है। सभी गांधीवादी विचारों के माध्यम से चलने वाला सामान्य धागा "सत्य और अहिंसा, यानी अहिंसा" की उनकी अवधारणा है। उनके विचार मानव व्यवहार की उनकी गहरी समझ, अंग्रेजों से निपटने के दशकों, जन आंदोलनों का आयोजन, सामाजिक बुराइयों से लड़ने, सक्रिय रूप से अभ्यास करने और पूरे भारत में जीवन के विभिन्न पहलुओं से लोगों की समस्याओं को समझने और समझने का परिणाम हैं। दुनिया जटिल सामाजिक मुद्दों की अपनी व्यापक समझ के कारण, गांधी आज भी प्रासंगिक हैं, विशेषकर उनकी अहिंसा की अवधारणा।

गांधीवादी विचारों के दो प्रमुख सिद्धांतः सत्य और अहिंसाः गांधी जी कहते हैं कि अहिंसा सत्य तक पहुंचने का माध्यम है। इसलिए अहिंसा की ओर जाने से पहले हमें पहले उनके सत्य की अवधारणा को समझना होगा।

सत्य की गांधीवादी अवधारणा को दो पहलुओं में समझा जा सकता है– सापेक्ष सत्य और पूर्ण सत्य। उन्हें उद्धृत करने के लिए, "सत्य प्रत्येक मानव हृदय में निवास करता है, और व्यक्ति को वहां इसकी खोज करनी होती है, और सत्य द्वारा निर्देशित किया जाता है जैसा कि कोई इसे देखता है। लेकिन किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि वह सच्चाई के अपने दृष्टिकोण के अनुसार कार्य करने के लिए दूसरों को बाध्य करे।" इसका अर्थ है कि सत्य अलग–अलग लोगों के लिए भिन्न हो सकता है और सत्य के बारे में अपना दृष्टिकोण दूसरे पर नहीं थोपना चाहिए। इस प्रकार, सत्य सापेक्ष सत्य है। लेकिन साथ ही गांधी यह भी मानते थे कि सत्य एक है। यहाँ वह ईश्वर और नैतिकता को परम और परम सत्य के रूप में संदर्भित करता है। वे कहते हैं, "जो एक व्यक्ति को सत्य प्रतीत होता है, वह दूसरे व्यक्ति को असत्य प्रतीत होता है। लेकिन इससे साधक को परेशान होने की जरूरत नहीं है। जहां ईमानदार प्रयास होगा, यह महसूस किया जाएगा कि जो अलग–अलग सत्य प्रतीत होते हैं, वे एक ही पेड़ के अनगिनत और स्पष्ट रूप से अलग–अलग पत्तों की तरह होते हैं", इस प्रकार सापेक्ष और पूर्ण सत्य के विचार को समन्वयित करते हैं।

अहिंसा की उनकी अवधारणा के लिए, इसका मतलब केवल शांति या प्रत्यक्ष हिंसा की अनुपस्थिति नहीं है। बल्कि इसका मतलब है सक्रिय प्रेम दिखाना। उनके अनुसार, "अहिंसा वह कच्ची चीज नहीं है जिसे प्रकट करने के लिए बनाया गया है। किसी भी जीवित वस्तु को चोट न पहुँचाना निःसंदेह अहिंसा का अंग है। लेकिन यह इसकी सबसे कम अभिव्यक्ति है। अहिंसा का सिद्धांत हर बुरे विचार से, अनुचित जल्दबाजी से, झूठ बोलने से, घृणा से, किसी को भी बीमार करने से आहत होता है। दुनिया को जिस चीज की जरूरत है, उस पर हमारी पकड़ से भी इसका उल्लंघन होता है।"

गांधी जी ने गलत करने वालों के प्रति भी प्रेम दिखाने की वकालत की क्योंकि उनका मानना था कि बुराई का विरोध करना है न कि उस व्यक्ति का जो इसे करता है। यह भी अहिंसा का ही एक अंग है। उनका मानना था कि कोई भी इंसान जन्म से बुरा नहीं होता और प्यार हर इंसान को जोड़ता है। अपने रुख को सही ठहराने के लिए उन्होंने तर्क दिया कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में परिस्थितियों के आधार पर सही और गलत की अपनी धारणा बनाता है और इसलिए, हिंसा और विनाश के बीच रहने वाला कोई व्यक्ति इसके साथ हो सकता है। वे कहते हैं, "जानबूझकर या अनजाने में, हम अपने दैनिक जीवन में एक दूसरे के प्रति अहिंसक रूप से कार्य कर रहे हैं ... मैंने पाया है कि जीवन विनाश के बीच में बना रहता है और इसलिए विनाश की तुलना में उच्च कानून होना चाहिए"।

उनका मानना था कि अहिंसा मनुष्य द्वारा बनाए गए विनाश के सबसे शक्तिशाली हथियारों से अधिक शक्तिशाली है। गांधी जी ने बड़े जन आंदोलनों को सफलतापूर्वक आयोजित करके और किसानों,

एसोसिएट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान विभाग, सतीश चन्द्र कालेज, बलिया (उ०प्र०), भारत

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

महिलाओं, छात्रों, श्रमिकों आदि के दैनिक जीवन में बदलाव लाकर इन शब्दों को साबित किया है। उन्होंने पहले दक्षिण अफ्रीका में अहिंसा के विचार का इस्तेमाल किया और फिर भारत में कई आंदोलनों में। . भारतीय स्वतंत्रता के लिए अधिकांश प्रमुख आंदोलन उनके अहिंसा के विचार पर आधारित थे। चाहे वह 1917–1918 का खेड़ा और चंपारण सत्याग्रह हो, जहां उन्होंने किसानों के लिए कर राहत जीती या 1924–1925 का वायकोम सत्याग्रह जहां उन्होंने दलित वर्गों में अस्पृश्यता और मंदिर में प्रवेश के खिलाफ लड़ाई लड़ी। चाहे वह 1920 का असहयोग आंदोलन हो, जहां उन्होंने ब्रिटिश भारत सरकार की दमनकारी नीतियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी (ऐसा उनका अहिंसा में विश्वास था कि उन्होंने चौरी चौरा की घटना के बाद इसे वापस ले लिया क्योंकि उन्हें लगा कि विद्रोह ने अपनी अहिंसक प्रकृति खो दी है।) या 1930 का नमक सत्याग्रह जहां उन्होंने ब्रिटिश राज नमक कानूनों या 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन को तोड़ा जहां उन्होंने भारत से ब्रिटिश वापसी की मांग की।

एम.वी. नायडू ने गांधी जी के नेतृत्व वाले सभी सत्याग्रह आंदोलनों में देखी गई छह प्रमुख विशेषताओं को सूचीबद्ध किया है और यह स्पष्ट है कि वे सभी उनके अहिंसा के विचार से प्रेरित हैं।

1. जन भागीदारीभागीदारी – गांधी जी का मानना था कि एक अन्यायपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था के खिलाफ एक सीधी अहिंसक कार्रवाई मुट्ठी भर अभिजात वर्ग द्वारा नहीं की जा सकती है। जब क्रांतिकारियों की संख्या कम होती है, तो वे गुप्त हो जाते हैं और प्रभावी बनने के लिए हिंसा और आतंक का इस्तेमाल करते हैं। जब लाखों लोग एक साथ मार्च करते हैं, तो वे गुप्त नहीं हो सकते हैं, और उनके द्वारा या उनके खिलाफ हथियारों का उपयोग अप्रासंगिक या अप्रभावी हो जाता है। पूरे देश में इन अहिंसक संघर्षों में महिलाओं और छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। एम.वी. नायडू का तर्क है कि एक लोकतांत्रिक जीवन शैली के लिए प्रशिक्षण आधार के रूप में, इन संगठनों (कांग्रेस और कई अन्य संघों और संघों) का दूरगामी प्रभाव पड़ाय उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को संभालने के लिए भारतीयों को तैयार किया।

2. लोकतांत्रिक आंदोलन – गांधी जी का मानना था कि निरंकुश संस्थाएं अहिंसा के विरोधी हैं। आंदोलन पूरी तरह से लोकतांत्रिक होना चाहिए।

3. संघर्ष के तरीके – आंदोलनकारी गतिविधियों जैसे मार्च, प्रदर्शन और सभाओं सेय हड़ताल, बहिष्कार और कानून तोड़ने जैसी विरोध ा गतिविधियांय रचनात्मक कार्यक्रम जैसी सामाजिक विकास गतिविधियों के लिए, गांधी जी ने अपने अनुयायियों के लिए निर्धारित लंबी दूरी की गतिविधि ायों की एक योजना– कताई, वयस्क शिक्षा, स्वच्छता सुधार, पशु देखभाल, ग्रामीण विकास, हरिजन उत्थान, खादी उद्योग, आदि सभी का उपयोग किया गया था। गांधीवादी सत्याग्रहों में।

4. समग्र आंदोलन – अहिंसा समग्र हैय अहिंसक क्रांति व्यक्तियों और समाज के सर्वांगीण परिवर्तन पर आधारित है।

5. संघर्ष का विकास – जैसे–जैसे लोग अधिक से अधिक जागरूक होते गए, अहिंसक संघर्ष परिपक्व होते गए। गांधी जी ने असहयोग को सविनय अवज्ञा में बदल दिया। अर्थात, केवल शासन की सहायता न करने से, लोग अब अहिंसक रूप से कानून की अवहेलना और अवज्ञा करने के लिए और परिणामी दंड को अहिंसक रूप से भुगतने के लिए तैयार थे।

6. भय पर विजय – इन सभी आंदोलनों के दौरान लोगों ने भय पर विजय प्राप्त की। सरकारी उत्पीड़न, शारीरिक पीड़ा और शारीरिक मृत्यु ने उन्हें अब और नहीं डराया। इसने अंततः अंग्रेजों को भारत छोड़ने का एक जोरदार और स्पष्ट संदेश भेजा।
गांधी जी के नेतृत्व में इन आंदोलनों ने भारत को अंग्रेजों से आजादी दिलाने में मदद की। गांधी जी का मानना था कि प्रत्येक मनुष्य के लिए अहिंसा का अभ्यास करना संभव है क्योंकि यह एक आत्मा शक्ति है और प्रत्येक के भीतर एक आत्मा है। सत्य और अहिंसा की उनकी अवधारणा पर चर्चा करने के बाद, आइए अब उनके अहिंसा के विचार की आज की दुनिया में प्रासंगिकता पर चलते हैं।

आज की दुनिया में अहिंसा के गांधीवादी विचार की प्रासंगिकताः आज की दुनिया में, लोग अधिक से अधिक भौतिकवादी और सत्ता के भूखे होते जा रहे हैं, अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा और भी प्रासंगिक हो गई है। उन्हें उद्धृत करने के लिए, "अहिंसा में पहला कदम यह है कि हम अपने दैनिक जीवन में, अपने बीच की तरह, सच्चाई, नम्रता, सहिष्णुता, प्रेम और दया की खेती करें।" गांधी जी एक आदर्शवादी होने के साथ–साथ एक व्यावहारिक व्यक्ति भी थे। अहिंसा के उनके विचार को सामाजिक अन्याय, राजनीतिक उत्पीड़न से लड़ने और सैन्य संघर्षों को कम करने की रणनीति के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्हें अक्सर दुनिया भर में राजनीतिक नेताओं, नीति निर्माताओं, गैर सरकारी संगठनों, फिल्मों आदि में उद्धृत किया जाता है। इससे पता चलता है कि आज भी गांधी जी प्रासंगिक बने हुए हैं और लोग अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा के बारे में अधिक से अधिक जागरूक हो रहे हैं, जो इस भौतिकवादी दुनिया में सक्रिय प्रेम के बारे में सिखाती है।

आइए नजर डालते हैं कुछ सबसे बड़ी चुनौतियों पर जिनका आज मानवता सामना कर रही हैः आतंकवादय, गरीबी और भूखय, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण ग्लोबल वार्मिंगय सामूहिक विनाश के हथियारों की बढ़ती संख्या के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

साथ सैन्य संघर्ष का जोखिमय जीवन के हर क्षेत्र में चरमपंथियों का उदय, चाहे वह धर्म हो या राजनीति, आदि।

यदि हम अहिंसा के गांधीवादी दर्शन को लागू करें, तो उपरोक्त प्रत्येक समस्या को सौहार्दपूर्ण ढंग से हलध्कम किया जा सकता है। यह कहना सही होगा कि दुनिया को पिछले दिनों की तुलना में आज अहिंसा के गांधीवादी विचार की ज्यादा जरूरत है।

इसका उपयोग सामाजिक के साथ–साथ आर्थिक परिवर्तन की रणनीति के रूप में भी किया जा सकता है।

अहिंसा की इस अवधारणा में दुनिया भर में व्याप्त गरीबी और भूख को काफी हद तक कम करने और अंततः समाप्त करने की क्षमता है। यह केवल शांति ही नहीं बल्कि सक्रिय प्रेम दिखाना सिखाता है। अगर लोग और सरकार सक्रिय रूप से समाज के गरीब तबके की परवाह करने लगे, तो वह दिन दूर नहीं जब गरीबी और भूख अतीत की बात हो जाएगी।

प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के बारे में गांधी जी ने कहा है, "हर किसी की जरूरत के लिए पर्याप्त है, लेकिन हर किसी के लालच के लिए नहीं"। अहिंसा की गांधीवादी अवधारणा इस बात की वकालत करती है कि प्रकृति मां के पास मानव जाति की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं लेकिन इन संसाधनों के अत्यधिक संचय से सामाजिक–आर्थिक असमानताएं पैदा होंगी। यदि इन संसाधनों को समान रूप से वितरित किया जाए, तो कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं रहेगा। तो, अहिंसा का विचार भी प्रकृति की रक्षा और संरक्षण के प्रति सक्रिय प्रेम दिखाने का तात्पर्य है।

धर्म और राजनीति जैसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में चरमपंथ के बारे में, अहिंसा का सिद्धांत जोर देता है कि "सत्य एक है, रास्ते कई हैं"। जैसा कि गांधी जी ने समझाया कि परम सत्य एक है, अर्थात ईश्वर लेकिन उस सत्य तक पहुंचने के विभिन्न तरीके हो सकते हैं। उसे उद्धृत करने के लिए, "हर आदमी में अपनी रोशनी के अनुसार सत्य का अनुसरण करने में कुछ भी गलत नहीं है। वास्तव में ऐसा करना उसका कर्तव्य है।" यहाँ भी, यदि गांधीवादी सिद्धांत को अपनाया जाता है तो आज व्याप्त उग्रवाद में कमी आएगी।

निष्कर्ष – हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आज दुनिया को अहिंसा के गांधीवादी दर्शन की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है क्योंकि दुनिया भर में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मतभेद तेजी से बढ़े हैं जिससे व्यापक हिंसा और गरीबी फैल गई है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण मानवता का अस्तित्व भी दांव पर लगा है। प्रकृति के अत्यधिक दोहन को ध्यान में रखते हुए सतत विकास का गांधीवादी दर्शन भी उनके अहिंसा के विचार का एक हिस्सा है। अहिंसा की यह अवधारणा उनके सत्य के विचार से जुड़ी हुई है।

मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और आंग सान सू की से लेकर राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण, विनोबा भावे और अन्ना हजारे तक गांधी जी के अनुयायियों ने अहिंसा पर आधारित जन आंदोलनों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया है और इसकी प्रासंगिकता को बार–बार प्रदर्शित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नायडू, एम.वी., गांधीवादी व्यावहारिक–आदर्शवादः अहिंसा, द कैनेडियन जर्नल ऑफ पीस एंड कॉन्फ्लिक्ट स्टडीज, नवंबर 2006, वॉल्यूम 38, नंबर 2.
2. कुमार, रवींद्र, अहिंसा की प्रासंगिकता और गांधी टुडे का सत्याग्रह, https%//www-mkgandhi-org
3. कुमार, रवींद्र, महात्मा गांधी और अहिंसा, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली।
4. हॉक्स, डस्टिन ई, द फेल्योर ऑफ पैसिफिज्म एंड द सक्सेस ऑफ अहिंसा, पर्सपेक्टिव्स ऑन पॉलिटिक्स, वॉल्यूम 11, नंबर 2, जून 2013.
5. मीजर, सास्कियन, द पावर ऑफ द ट्रुथफुलः सत्या इन द नॉन–वायलेंस ऑफ गांधी एंड हवेल, इंटरनेशनल जर्नल ऑन वर्ल्ड पीस, वॉल्यूम 32, नंबर 2, जून 2015.
6. यादव, आर.एस., इंटरनेशनल पीस एंड गांधीयन वर्ल्ड ऑर्डर, द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, वॉल्यूम 66, नंबर 3, जुलाई–सितंबर 2005.

*****